**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.hindijournal.com**
**Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 01-02**

# मूल्यों के संदर्भ में अमृतलाल नागर के उपन्यासों का विवेचन

**डॉ० अन्जू बाला**

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), गुरू नानक गर्ल्ज़ कॉलेज, सन्तपुरा, यमुनानगर, हरियाणा, भारत।

**प्रस्तावना**

मूल्य तथा मानव का गहन सम्बन्ध है। मूल्य किसी भी स्वस्थ समाज का मेरूदण्ड है। मूल्यो के अभाव मे समाज का ढाँचा खड़ा नही रह सकता। मूल्यों का स्त्रोत मानव का विवेक है, विवेक से ही विचारधारा बनती है, विचारधारा से ही दृष्टिकोण का जन्म होता है। मूल्य अपने आप मे एक अवधारणा है। आचरण–विचारों के समेकित रूप को ही मूल्य कहा जाता है। मूल्य स्थापित हो जाने पर ही हम कहते है कि क्या उचित है और क्या अनुचित। इसी दृष्टिकोण से मूल्यों का सृजन होता है।

हर मानव की अभिलाशाएँ भिन्न है, सोच भिन्न है तो मूल्यों में भी भिन्नता है। मूल्यो के संघर्ष के कारण ही आज पति– पत्नी, पिता – पुत्र, भाई – भाई तथा भाई – बहन के सम्बन्धों मे परिवर्तन आया है।

सभी मूल्य मानव मूल्य हैं चाहे वे नैतिक मूल्य हों, चाहे सामाजिक मूल्य हों या सौंदर्यपरक मूल्य हों मूल्य समाज के सर्जक हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे रचनात्मक एंव सर्जक मूल्यो की आवष्यकता है, साहित्य हो, धर्म हो, दर्षन हो, सामाजिक या राजनैतिक क्षेत्र, सभी क्षेत्रो मे नवीन रचनात्मक मूल्यो को तलाषने की आवष्यकता है, तभी मानव जीवन समृद्व होगा।

एक महान साहित्यकार वही हो सकता है जो मानवीय मूल्यों को अपनी रचना मे व्यक्त करे और जो मूल्य समाज की प्रगति मे बाधक हो उन्हे नकारे। किसी काल विशेष के सामूहिक अनुभव मूल्यों के रूप मे साहित्य के माध्यम से प्रकट होते हैं। साहित्य के मूल्य जीवन मूल्यों से भिन्न नही होते। हां मानवीय संवेदनाओ के अभाव मे मूल्यों की कल्पना भी नही की जा सकती ।

अमृतलाल नागर हिन्दी के प्रसिद्व उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यासों में सामाजिक, सांस्कृतिक, दर्षन तथा मानव जीवन के विभिन्न मूल्यो की अभिव्यक्ति हुई है। नागर जी के उपन्यास हैं – महाकाल, सेठ बांकेमल, बूंद और समुद्र, अमृत और विष, नाच्यो बहुत गोपाल, बिखरे तिनके, शतरंज के मोहरे, सुहाग के नूपुर, सात घूंघट बाला मुखडा, मानस का हंस, खंजन नयन और एकदा नैमिषारण्ये।

नागर जी ने अपने उपन्यासों में आज की सामाजिक उथल–पुथल के बीच व्यक्ति के मानसिक द्वन्द्व का उद्घाटन किया है। व्यक्ति की कुण्ठा तथा आत्म संघर्ष का बारीकी से चित्रण किया है।

नागर जी के उपन्यासों में सामाजिक, सांस्कृतिक, दर्षन तथा मानव जीवन के विभिन्न मूल्यो की अभिव्यक्ति हुई है। नागर जी ने व्यक्ति व समाज दोनो को समाज के प्रति उत्तरदायी माना है। उन्होने अपने उपन्यासों के माध्यम से एक और जहां समाज की विभिन्न समस्याओं को सार्थकता प्रदान की, वहीं दूसरी और व्यक्ति और समाज को परस्पर सापेक्ष मानकर नवीन मूल्यों की रचना की।

नागर जी ने प्रथम सामाजिक उपन्यास महाकाल (भूख) में व्यक्ति तथा समाज सम्बन्धी मूल्यों को अभिव्यक्त किया है। लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से यह स्पष्ट किया है। कि भूखा व्यक्ति अपनी भूख को शांत करने के लिए कोई भी अमानवीय व अनैतिक कार्य करने के लिए विवश होता है। यह भूख चाहे पेट की हो, पैसे की हो, या काम की हो। अर्थ व काम की भूख से व्याकुल व्यक्ति सामजिक व्यवस्या को ही छिन्न – भिन्न कर डालता है। मूल्यों के विघटन की बात नागर जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से की है। आज समाज मे दिन प्रतिदिन घटित हो रही घटनाओं के माध्यम से मूल्यों का पतन स्पष्ट दिखाई दे रहा है। महाकाल (भूख) उपन्यास के पात्र पांचू गोपाल के माघ्यम से नागर जी ने के मध्यमवर्गीय समाज मे व्याप्त संस्कारों पर भी प्रकाष डाला है कि किस तरह इस समाज के लोग घर मे अकाल की स्थिति होने पर भी अकाल को आबरू के दामन मे छिपा लेते हैं।

व्यक्ति और समाज के परस्पर मिलकर चलने मे ही दोनो का कल्याण निहित है। लेखक की समन्यवादी मूल्य दृष्टि पर आधारित है उपन्यास– 'बूंद और समुद्र' बूंद व्यक्ति का प्रतीक है, समुद्र समष्टि का। व्यक्ति यदि शब्द है तो समाज उस का अर्थ है। समुद्र मे हर बूंद का अपना महत्त्व है चाहे वह बड़ी हो या छोटी । समाज में भी छोटाई – बड़ाई के नैतिक मापदण्ड के लिए कोई मायने नही। आज का मनुष्य अपनी गलतियों को नज़र अंदाज़ कर दूसरों को गलत बताता है इस से आतंक फैलता जाता है। मनुष्य की यही स्थिति अप्राकृतिक है। नागर जी ने अपने उपन्यास के माध्यम से व्यक्ति के हित तथा समाज के हित के मूल्यों का संघर्ष दिखाकर समूची मानवता के कल्याण की कामना की है।

नागर जी ने अपने उपन्यासों में विवाह सम्बन्धी बदलती मूल्य दृष्टि का भी निरूपण किया है। परम्परागत रूप मे विवाह को नारी पुरूष का पवित्र तथा स्थायी बन्धन माना जाता था । लेकिन आज विवाह को नरी स्वतन्त्रता का बाधक माना जाने लगा है। 'बूंद और समुद्र' उपन्यास के माध्यम से इस समस्या पर प्रकाश डाला गया है।

'अमृत और विष' उपन्यास मे नागर जी ने विधवा विवाह तथा अन्तर्जातीय विवाह सम्बन्धी मूल्यों का समर्थन किया है।

नागर जी ने 'सुहाग के नुपूर' मे नारी सम्बन्धी मूल्यों को उद्घाटित किया है। उन्होने सामाजिक व्यवस्था मे पीड़ित नारी की मार्मिक तथा करूण गाथा को प्रस्तुत किया है। उपन्यास में एक नारी कुलवधू है तो दूसरी नगरवधू । एक घर की सीमाओं मे घुट रही है तो दूसरी खुले समाज में असपफल विद्रोह के परिणामस्वरूप घुट रही है। उन्होने वेष्यावृति के कारणो तथा परिणामो को स्पष्ट किया है। पुरूष की स्वार्थी प्रवृति तथा सामाजिक ढांचे की असंगतियों को भी उद्धाटित किया है। पति चाहे कितना भी दुराचारी, अत्याचारी, तथा अनेक बुराइयों मे लिप्त हो परन्तु नारी से उम्मीद करता है कि वह एकनिष्ठ और ईमानदार रहे ।

'शतरंज के मोहरे' मे भी नागर जी ने विभिन्न नारी मूल्यों को अभिव्यक्त किया है। हिन्दू समाज के जड़ मूल्यों का मार्मिक चित्रण किया गया है। नागर जी ने जहाँ एक और पातिव्रत्य और सतीत्व के मूल्यों मे आस्था रखने वाली नारियों का चित्रण किया है, वहीं दूसरी और नारियों के नैतिक पतन का भी यथार्थ चित्रण किया है।

'सात घूंघट वाला मुखड़ा' मे नागर जी ने स्पष्ट किया है कि पुरूष प्रधान समाज मे पुरूष ने सदैव नारी का शोषण किया है। तद्युगीन समाज मे नारी का क्रय–विक्रय सामान्य बात थी । इस उपन्यास मे नागर जी ने नारी की नारी के प्रति हिंसा को दर्षाया है।

'खंजन नयन' उपन्यास मे नागर जी ने स्वीकार किया है नारी अमृत

है तो विष भी है, नरक है तो स्वर्ग भी है, विजय है तो पराजय भी है। हमारी सामाजिक सरंचना मे जहां हर स्थान पर पुरूष को नारी से उच्च माना जाता रहा है वहाँ नारी समस्या का एक ही समाधान उन्होने माना है नारी स्वावलम्बन और नारी का स्वातन्त्रय।

'मानस का हंस' मे नागर जी ने मानव मन की मूल प्रवृतियों सम्बंन्धी मूल्यों को अभिव्यक्त किया है कि मानव मन की मूल प्रवृतियो को दमित करना हानिप्रद है। 'बिखरे तिनके' उपन्यास में नागर जी ने अन्तर्जातीय विवाह सम्बन्धी मूल्यों की वर्तमान स्थिति को स्पष्ट किया है। युवा वर्ग अन्तर्जातीय प्रेम विवाह का समर्थन करता है। उच्च वर्ग के लोगो में अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन बढ़ रहा है, वहां कोई रोक–टोक व आलोचना भी नही है जबकि निम्न वर्ग मे अन्तर्जातीय विवाह को बुरा माना जाता है। कभी कभी तो स्थिति यह आ जाती है कि विवाह बन्धन में बन्धने वाले दम्पति का उस समाज में रहना कठिन हो जाता है। माता पिता व समाज के विरोध से बचने के लिए उन्हे पुलिस की शरण लेनी पड़ती है।

नागर जी ने अहीर के बेटे सुहागी तथा करमू हरिजन की बेटी के परस्पर प्रेम तथा विवाह प्रसंग के माध्यम से इस पर प्रकाष डाला है नागर जी प्रेम को विवाह मे परिणत होना आवष्यक मानते हैं।उन्होने यह भी स्पष्ट किया है कि अब विवाह संबधी सामाजिक मूल्यों मे बदलाव आ रहा है । जन्म–जन्मान्तर तक सम्बन्ध रखने वाला मूल्य विघटित हो चुके हैं। तलाक बढ़ते जा रहे हैं। आयोजित विवाह के स्थान पर अन्तर्जातीय विवाह तथा प्रेम विवाह का प्रचलन बढ़ रहा है।

'नागर जी का 'नाच्यौ बहुत गोपाल' (1978) लीक से हटकर उपन्यास है। इसमे उन्होने नगरों में रहने वाले मेहतर समाज कि भाग्यगाथा को प्रस्तुत किया है। उन्होने इस उपन्यास मे जाति, वर्ग तथा वर्ण मे बंटे समाज तथा उनमे प्रचलित रूढ़ियो पर तीव्र प्रहार किए हैं तथा वर्ण व्यवस्था पर चुनौती भरे प्रष्न उठाए हैं। उन्होने मेहतर समाज मे उभरने वाली मूल्य चेतना का भी यहाँ–वहाँ उल्लेख किया है। जीवन जिस गति से परिवर्तित हो रहा है, उसे आज हम सब अनुभव कर रहे हैं। पिछले आदर्षों, मूल्यों का स्थान या तो नये मूल्य ले रहे हैं या वे युगाानुकूल परिवर्तित हो कर सामने आ रहे हैं। नये मूल्यों की प्रतिष्ठा से पुरानी पीढ़ी तथा नई पीढ़ी मे संघर्ष की स्थिति पैदा हुई है। फिर भी बदलते मूल्यों को हमें स्वीकारना ही होगा नही तो सामंजस्य के अभाव से पुराने मूल्यों का समर्थन करने वालो का टिके रहना कठिन हो जाएगा।

'सेठ बांकेमल' उपन्यास मे सेठ बांकेमल पुराने मूल्यो का समर्थन करता है तथा नये मूल्यो की निंदा करता है। सेठ बांकेमल के कथनों के माध्यम से नागर जी ने प्रेम की स्वतन्त्रता, नारी षिक्षा, नारी जागरण तथा प्रगति की और उन्मुख भारत की मूल्य परिवर्तन की स्थिति को स्पष्ट किया है।

मूल्य ही व्यक्ति के अस्तित्त्व एंव उसके विकास के विधायक तत्त्व होते हैं। सामाजिक मूल्य समाज के व्यवहार को अनुषासित करते हैं। मूल्य ही मनुष्य को पषुओं से पृथक करते हैं। साहित्य तथा मूल्यों का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। अमृतलाल नागर जी ने जीवन को भली भांति देखकर और अनुभव के धरातल पर परख कर नवीन मूल्यों की सृष्टि की है। उन्होने बदलते सामाजिक मूल्यों का सूक्ष्मता से देखा और परखा भी है। उन्होने ऐतिहासिक, सामाजिक तथा जीवनीपरक उपन्यास लिखे हैं और उनमे व्यक्त नए मूल्यों का विष्लेषण करने का सफल प्रयत्न किया है।

सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए उन्होने व्यक्ति और समाज कों सापेक्ष माना है। प्रेम और विवाह विषयक मूल्यों में उन्होने समाज मे विवाह संस्था को अनिवार्य माना है। उन्होने प्रेम विवाह, विधवा विवाह, तथा अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन किया है तथा अनमेल विवाह, बाल विवाह तथा बहु विवाह आदि का विरोध किया है।

नागर जी ने अपने उपन्यासों में आर्थिक मूल्यों का भी विष्लेषण किया है। सामंतवादी तथा पूंजीवादी व्यवस्था निम्न वर्ग तथा मध्यवर्ग को अपनी स्थिति मे सुधार नही लाने देती।

वर्तमान राजनितिक परिदृष्य को सामने रखते हुए उन्होने स्पष्ट किया है। कि भ्रष्टाचार को दूर करने का नारा लगाने वाले नेता ही भ्रष्टाचार मे लीन रहते हैं तथा उन्होने अपने उपन्यासों में राजनीतिक मूल्य बोध को स्पष्ट किया है।

नागर जी ने अधिकतर उपन्यासो मे परोपकार, सेवा, मानव प्रेम, भाईचारे की भावना तथा अहिंसा जैसे मानवतावादी मूल्यों को प्रतिष्ठित किया है।

नागर जी नारी स्वावलम्बन तथा नारी पुरूष समानता के समर्थक है। उन्होने दहेज प्रथा तथा उसके दुष्परिणामों को अपने उपन्यासों के माध्यम से उकेरा है। नारी षोषण का जीवंत चित्रण उन्होने किया है तथा नारी वर्ग के संगठित होने मे ही इसका समाधान बताया है। इस तरह उनके उपन्यासों में मानवीय व सामाजिक मूल्यों की सफल अभिव्यक्ति हुई है।

## आधार ग्रन्थ सूची


1. नागर, अमृतलाल 1947 महाकाल (भूख) दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्ज,1970
2. नागर, अमृतलाल 1955 सेठ बांकेमल इलाहाबाद : किताब महल, 1971
3. नागर, अमृतलाल 1956 बूंद और समुद्र इलाहाबाद : किताब महल, 1978
4. नागर, अमृतलाल 1978 शतंरज के मोहरे दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 1974
5. नागर, अमृतलाल 1960 सुंहाग के नूपुर दिल्ली : राजकमल प्रकाषन, 1963
6. नागर, अमृतलाल 1966 अमृत और विष इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाषन, 1976
7. नागर, अमृतलाल 1968 सात घूँघट वाला मुखडा दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्ज, 1971
8. नागर, अमृतलाल 1972 एकदा नैमिषारण्ये इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाषन, 1972
9. नागर, अमृतलाल 1972 मानस का हंस दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्ज, 1980
10. नागर, अमृतलाल 1978 नाच्यौ बहुत गोपाल दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्ज, 1978
11. नागर, अमृतलाल 1981 खंजन नयन दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्ज, 1981
12. नागर, अमृतलाल 1982 बिखरे तिनके दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्ज, 1982


## संदर्भ ग्रन्थों की सूची


1. गायत्री लाम्बा : अमृतलाल नागर के साहित्य का मूल्याकंन हरमन पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली, 1996
2. कौषिक, हेमराज : अमृतलाल नागर के उपन्यास प्रकाषन संस्थान, नई दिल्ली
3. जैन, नेमिचन्द्र : बदलते परिप्रेक्ष्य दिल्ली : राजकमल प्रकाषन, 1968
4. जोषी चण्डीप्रसाद : हिन्दी उपन्यास : समाजषास्त्रीय विवेचन , कानपुर : अनुसंधान प्रकाषन, 1962